International Journal of Academic Excellence and Research (IJAER)
ISSN: 3107-3913(Online)
Vol. 01, No. 04, October-December, 2025, pp 51-56
© Copyright by MGM Publishing House (MGMPH)
www.mgmpublications.com

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय

डॉ. सुमन सिंह*
सहायक आचार्या, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली।
***Corresponding author:** sumansingh@ignou.ac.in
Citation:

सारः *आधुनिक भारत में प्रथम शिक्षा नीति के जनक एशिया महादेश के विशालतम विद्या केन्द्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक एंव आदर्श कुलपति, शिक्षा द्वारा देश में कृषक, वैज्ञानिक एंव औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात करने वाले युग पुरूष महान शिक्षाविद, प्रांतीय असेंम्बली एंव केन्द्रीय कौंसिल में लगातार 30 वर्षों तक जनता की आवाज को बुलन्द करने वाले भारतीय राजनीति के शिखर पुरूष, स्वतन्त्रता संग्राम को गति एंव परिणति देने वाले भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के पितामह, भारतीय सांस्कृतिक नवजागरण और स्वदेशी एंव हिन्दी आंदोलनों के अग्रवर्ती प्रवर्तक मार्ग दर्शक, मंत्रदीक्षा के अभिनव क्रांतिकारी प्रयोग द्वारा लाखों अछूतों को विधर्मी होने से बचाने वाले तथा इन्हें शैक्षिक सामाजिक विचार धारा से जोड़ने वाले महान समाज सुधारक हिन्दुत्व के उत्थान एवं आजीवन हिन्दु मुस्लिम एकता के लिये संघर्ष करने वाले राष्ट्रवादी देश भक्त, चौरी चौरा काण्ड के 156 अभियुक्तों को फाँसी की सजा से बचाने वाले प्रभावशाली अधिवक्ता पत्रकारिता के क्षेत्र में नवीन एंव मौलिक सिद्धान्तों के प्रणेता, चिंतक पत्रकार सिल्वर टंग आरेटंर के क्षेत्र में विख्यात महानतम वाग्मी, शिक्षा जगत के महानतम फकीर प्रिंस ऑफ वेगर्स और नवजागरण, नवनिर्माण के आधुनिक काल खण्ड में लगभग 60 वर्षों के जीवित इतिहास माने जाने वाले युगद्रष्टा युग निर्माता, श्रृषि समन्वयवादी विचारक एंव मानवतावादी धर्म प्रवक्ता महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने सदियों की गुलामी और शोषण से जर्जर भारत की काया में पुन : नई चेतना व उर्जा का संचार कर उसे साहस शौर्य स्वाभिमान के साथ जीने योग्य बनाने में जिस अनथक एंव समर्पित भाव से लगातार 70 वर्षों तक त्याग व संघर्ष किया वह युगों तक अद्वितीय मिशाल है। महामना का व्यक्तित्व बहु आयामी था। उनके कार्य बहुरूप एंव देशव्यापी थे। जिन्हें शब्दों में बता पाना संभव नहीं, उनके सिर्फ कुछ प्रमुख कार्य अवदानों पर प्रकाश डाला जा रहा है। जिनमें उनकी महान सेवाओं तथा उनके त्याग, तप, की उँचाइयों की एक झलक मिलेगी।*

Article History:
Received: 20 November, 2025
Accepted: 05 December, 2025
Published: 11 December, 2025

शब्दकोशः
भारत, विशालतम, आदर्श, वैज्ञानिक, आवाज, भारतीय, शिखर, क्रांतिकारी, पत्रकारिता, नवीन, समन्वयवादी, महामना।

प्रस्तावना

भारत को अभिमान तुम्हारा तुम भारत के अभिमानी
पूज्य पुरोहित थे हम सबके, रहे सदैव समाधानी
तुम्हें कुशल याचक कहते हैं, किन्तु कौन तुम सा दानी
अक्षय शिक्षा सत्र तुम्हारा हे ब्राम्हण हे ब्रम्हज्ञानी

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by MGM Publishing House. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

अवतार एंव शिक्षा

कहा जाता है कि "गुदड़ी में लाल छिपे होते है" ठीक इसी प्रकार हमारी भारत की मिटटी समय –समय पर कुछ ऐसे ही प्रातः स्मरणीय महान विभूतियाँ को जन्म देती है जो इस कहावत को सच साबित करते है आपका जन्म पोष कृष्ण 8, बुधवार 25 दिसम्बर 1861 को सांय 6 बजकर 54 मिनट पर तीर्थराज प्रयाम में हुआ था। आपका परिवार साधारण, गरीब परन्तु सुंसस्कृत, शिक्षित परिवार था। माता का नाम मूना देवी तथा पिता का नाम पं0 ब्रजनाथ व्यास था आपके पूर्वज 1449 ई0 में मालवा प्रदेश से आकर प्रयाग में बस गये और स्थानवाची मल्लई अथवा चौबे नाम से जाने जाते थे बाद में महामना ने मल्लई को संस्कृतविष्ठ मालवीय बनाया। होनहार वीरवान के होते चिकने पात के अनुसार मालवीय जी बचपन से ही सदगुणों की खान थे। बहुत से बातें श्लोक आदि पिता से सुनकर ही याद हो जाते थे। किसी किताब को दुबारा पढ़ने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती थी। 5 वर्ष की उम्र में धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला में नाम लिखा गया जहाँ इंसानियत ही धर्म था एक आदर्श था। गुरू हरदेव जी थे। इसके बाद विद्या धर्म प्रवर्द्धिनी पाठशाला में पढ़ना आरम्भ किया महामना जी शिक्षा में सदाचार पालन तथा चरित्र निर्माण पर बल देते थे।

दूध पियो कसरत करो, नित्य जपों हरिनाम

महामना की प्रारंभिक शिक्षा इलाहाबाद में हुई। महाजनी पाठशाला में पाँच वर्ष की आयु में प्रारम्भ करके, मदन मोहन ने वास्तविक हिंदू संस्कारों को आत्मसात किया और स्कूल जाते समय, वे प्रतिदिन मानव मंदिर जाते और प्रार्थना करते थे। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर वे पूरे मनोयोग से उत्सव मनाते थे। उन्होंने पंद्रह वर्ष की आयु में मकरंद उपनाम से काव्य रचना प्रारंभ की। उन्होंने 1868 में प्रयाग राजकीय उच्च विद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात उन्होंने म्योर संन्ट्रल महाविद्यालय में प्रवेश लिया। वे विद्यालय के साथ–साथ महाविद्यालय में भी अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते थे। उन्होंने 1880 में हिन्दू समाज की स्थापना की।

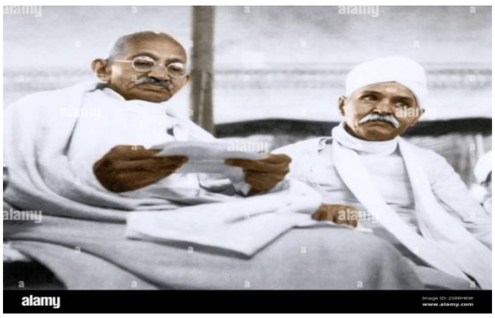

मालवीय जी स्वंय कहते थे कि पढ़ते समय सारी दुनिया को एक तरफ रखों और पुस्तकों में लेखक की विचार धारा में डूब जाओं यही तुम्हारी समाधि, उपासना है पंडित जी की शिक्षा के लिये माता मूना देवी जी को अपना एकमात्र कंगन गिरवी रखना पड़ता था, घरेलू बजट में कटौती करनी पडती थी। इस घटना का मालवीय जी के जीवन पर अमिट प्रभाव पड़ा उन्होंने स्वंय कहा कि, मैं गरीब माता–पिता का पुत्र हूँ और इससे गरीब विद्यार्थियों के कष्ट को समझता हूँ। जो विद्यार्थी गरीबी के कारण विश्वविद्यालय की फीस न दे सकने के

कारण शिक्षा से वंचित रह जाते हैं या हो जाएँ यह बात मुझे ब बहुत पीड़ा पहुँचाती है। यही से बीएच.यू. बनाने की लौ जल उठी। आपका बचपन से यह नियम था कि..प्रतिदिन के क्रिया कलापों की सूचना माता–पिता को बताया करेगें। इस नियम से आपको दिव्य प्रकाश उत्साह एंव शक्ति मिली। आपकी युवावस्था के बारे में कवि चकबस्त का कहना है कि –

तमाम उम्र कटी एक ही करीने पर

बहाया अपना लहू कौम के पसीने पर

सन 1878 में उच्च शिक्षा हेतु इलाहाबाद के म्योर सेन्ट्रल कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया, सन 1880 में एफ.ए.(इण्टर) 1884 में बी.ए. तथा 1891 में एल.एल.बी. किया। 1978 में आपका विवाह नन्दराम जी की पुत्री कुन्दन देवी जी से हुआ।

अध्यापन पत्रकारिता एंव वकालत

शिक्षा के बाद मालवीय जी अपना पूरा ध्यान ,समय धर्म प्रचार और देश सेवा में लगाना चाहते थे लेकिन उन्होंने कहा है कि, माँ मुझे कहने के लिये आई की नौकरी कर लो मैंने नही कह दी। मैने माँ की ओर देखा उनकी आँखें डबडबा आयी थीं। वे आँखे मेरी आखों में आज तक धँसी है। मेरी सब कल्पनाएँ माँ के आँसूओं में डूब गयी और मैंने अविलम्ब कहा माँ मुझे कुछ न कहो, मैं, नौकरी कर लूँगा।

अतः जुलाई 1885 में जिला हाई स्कूल में 40 रू माहवार पर अंग्रेजी अध्यापक की नौकारी स्वीकार कर ली। आपने स्वंय कहा कि मैं अपने अध्यापकीय जीवन से बड़ा संतुष्ट था। उन दिनों पढ़ाने में ही मेरा जीवन बीतता था। परन्तु उस समय मेरे जीवन ने बड़ा मोड़ लिया (जब मेंरे गुरू आदित्य राम जी मुझे अपने साथ कलकत्ता ले गये और कॉंग्रेस के मंच पर राजनीतिक भाषण के लिये खड़ा कर दिया) यहीं से मेरी जीवन दिशा बदली और अध्यापकीय जीवन की इतिश्री हो गयी।

मालवीय जी ने जैसे ही पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखा वैसे ही हिन्दुोस्थान चमक उठा। जिससे आपने पत्रकारिता क्षेत्र का आरम्भ किया। आपने हिन्दुोस्थान, इण्डियन पिपुल, एडवोकेट, अभ्युदय (प्रयाग), लीडर, मर्यादा, हिन्दूस्तान टाइम्स, आदि से पत्रिकारिता के क्षेत्रों में अदभुत योदान दिया। महामना जी पत्रकारिता को एक कला मानते थे। शुद्धि के प्रति आपका आग्रह इतना कठोर था कि किंचित भी कही दोष दिख जाने पर मशीन पर चढ़ी सामग्री को भी उतरवा कर ठीक करते थे। सर्वग्राह्य शैली, व भाषा का प्रयोग करते थे।

महामना जी ने 1892 से हाईकोर्ट इलाहाबाद में वकालत आरम्भ की और एक कुशल वकील के रूप में विख्यात होते देर न लगी। हाईकोर्ट के जज ने कहा भी था कि Look at Malaviyaji, He gave over three thousand Rupees a month at the bar. He had the ball at his feet but he refused to kick it. (II) The Goddess of wealth was waiting at the door with arti and garland in hand to welcome Malaviya, but his ears having caught the cry of the poor and the helpless, he turned back to kick-up the beggar"s satchel for their sake.

मालवीय जी की स्मरण शक्ति बचपन से ही अत्यन्त प्रबल थी। जो मृत्युपर्यन्त पूर्ववत बनी रही.... तीव्र मेधा और प्रखर धारणा शक्ति के कारण ही आप देश के महानतम वक्ता कहलाये । डॉ0 सर एस राधाकृष्णन जैसे महान वक्ता का मालवीय जी के विषय में कथन है कि.. He was the greatest orator in both Hindi and English. एक दिन आपने 5 घंटे तक भाषण दिया। जनरल डायर के लोमहर्षक अत्याचारों पर आपने इतना मार्मिक और प्रबल भाषण दिया कि बीच में कई बार सरकारी सदस्य से रो पड़े। अन्त में Home Minister सर विन्सेट स्मिथ की पत्नी ने उठ कर कहा था कि मेरे पति पण्डित मालवीय जी का मुकाबला नहीं कर सकते। 4 फरवरी 1922 में चौरी–चौरा काण्ड के अभियुक्तों के पक्ष में सन 1923 में बहस के लिये हाइकोर्ट में उपस्थित हुये और आपने 156 लोगों को फाँसी के फंदे से बचाया। भारतीय न्यायपालिका के इतिहास में आप संभवतः वह पहले एंव एकमात्र अधिवक्ता थे जिनके समक्ष चौरी चौरा काण्ड केस में बहस के दौरन उनके मार्शलिंग पावर (systematic presentation) से प्रभावित होकर चीफ जस्टिस ग्रिमउड मियर्स ने अपनी कुर्सी से, बीच में क्रमशः 3 बार उठकर उनके समक्ष सम्मान मे सिर झुकाया।

वकालत की खास विशेषताएँ

गरीबों के केस तथा सार्वजनिक हित के मामलों में कोई फीस न लेना, ऐसा केस हाँथ में न लेना जिसमें झूठ बोलना पड़े। हमेशा सफेद गाउन धारण करना। मालवीय जी ने कभी भी काला गाउन धारण नहीं किया। किसी विवाद में दोनों पक्षों को अदालत तक जाने से रोकने का भरसक प्रयास करना तथा अदालत के बाहर ही मामले को सुलह कराने की पूरी कोशिश करना, यह आपके वकालत कि खास विशेष बात थी।

राष्ट्रीय क्रांग्रेस व स्वतन्त्रता संग्राम आदोंलन, स्वदेशी आंदोलन अन्त्योजोद्धार एंव गंगा नहर आंदोलनः– महामना का संघर्ष सिर्फ स्वराज्य प्राप्त करन के लिए नहीं व बल्कि सुराज्य प्राप्त करना भी था। मालवीय जी चाहते थे कि गाँव–2 में कुटीर उद्योगों का जाल बिछा दिया जाय ताकि कोई भी स्त्री पुरूष बेकार न रहें। लोग आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बने या बन सकें। भारत एक कृषि प्रधान देश है इस कथन से मालवीय जी सहमत नहीं थे उनका मानना था कि यह अंग्रेजो का दिया नारा हैं। भारतीयों का मनोबल गिराने के लिये अपनी नीति के तहत अँग्रेजों ने इसे प्रचारित किया था। भारत कृषि के साथ औद्योगिक एंव व्यावसायिक रूप से भी अतीत में काफी समृद्ध रहा है। आपने हिन्दी उध्दारिणी सभा नागरी प्रचारिणी सभा का गठन किया । जन प्रतिनिधत्व के सवाल पर अंग्रेजी में अपने 1 घण्टे धारा प्रवाह भाषण के

बल पर 25 वर्षीय युवा मालवीय जी एकाएक राष्ट्रीय राजनीति के शीर्ष पर पहुँच गये। उनके भाषण के दौरान 22 बार तालियाँ बजीं थीं। सभापति दादा भाई नौरोजी ने कहा था कि इस युवा की वाणी में स्वंय भारत माता मुखरित हो रही है।

शैक्षणिक, राजनैतिक एंव अन्य समाज सुधार कार्य

महामना के पुरूषार्थ से सनातन धर्म महासभा एंव अखिल भारतीय सेवा समिति द्वारा उत्तरी भारत मे स्थापित सैकड़ों स्कूल कॉलेज आज बहुतों के लिए अज्ञात है । सभी की दृष्टि बी0 एच0 यू0 पर पड़ती है जो शिक्षा के क्षेत्र में आंदोलन के रूप में उदित व स्थापित हुआ महामना की अनुपम कृति जो उनकी स्मृतियों को चिरस्थायी बनाने के लिए अकेले ही पर्याप्त है। बी0एच0 यू0 महामना का प्राण है।

पं मदन मोहन मालवीय ने सनातन धर्म के हिन्दू आदर्शो के प्रचार प्रसार तथा भारत को विश्व में एक सशक्त–एवं विकसित राष्ट्र बनाने के लिए अनेक संगठनों की स्थापना की और उच्चस्तरीय पत्रिकाओं का संपादन किया। इसी की "स्थापना प्रयाग हिन्दू समाज" उद्देश्य से उन्होंने की तथा देश के समसामयिक मुद्दों और समस्याओं पर लेख लिखे। 1884 में वे हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि सभा के सदस्य बने। 1885 में उन्होंने अंग्रेजी

साप्ताहिक इंडियन यूनियन का संपादन किया। 1887 में उन्होंने सनातन धर्म और हिंदू संस्कृति के प्रचार के लिए भारत धर्म महामंडल की स्थापना की। वे हिंदुस्तान के संपादक थे। 1889 में उन्होंने इंडियन ओपिनियन का संपादन किया। 1891 में वे बैरिस्टर बने और इलाहाबाद उच्च न्यायलय में वकालत शुरू की इस दौरान उन्होंने कई महत्वपूर्ण मुकदमों में सफलतापूर्वक पैरवी की।

उन्होनें 1913 में बकालत छोड़ दी और ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाने के लिए राष्ट्र सेवा करने का निश्चय किया। महामना छात्रों को बेहतर शिक्षा और जीवनयापन के लिए सहायता प्रदान करने में गहरी रूचि रखते थे और इसी उद्देश्य से उन्होंन इलाहाबाद में मैकडोनाल हिंदू छात्रावास नामक एक छात्रवास का निर्माण करवाया और 1889 में वहाँ एक पुस्तकालय की स्थापना भी की।

वह 1916 तक इलाहाबाद नगरपालिका के सदस्य रहें और कई वर्षो तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सम्मानित सदस्य भी रहे। 1907 में, वसंत पंचमी के दिन उन्होंने हिंदी मे अभ्युदय नामक एक साप्ताहिक पात्रिका शुरू की। 1990 में लीडर नामक एक अंग्रेजी दैनिक निकालने में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। अपने पिता की मृत्यु के बाद, उन्होंने राष्ट्र की सेवा अनेक तरीकों से करने का निश्चय किया। 1919 में प्रयाग के पावन कुंभ मेले में उन्होंने तीर्थ यात्रियों की सेवा के लिए प्रयाग सेवा समिति की स्थापना की। उन्होनें महान महाकाव्य महाभारत से प्रेरित होकर स्वयं को निस्वार्थ भाव से समर्पित कर दिया । और निम्नलिखित प्रसिद्ध श्लोक को अपना मंत्र बना लियाः

न त्वंह कामये राजयं, न स्वर्ग न पुनर्भवम्।

कामये दुःख तपानाम् प्राणिनामार्तनाशनम्।।

यह लक्ष्य आगे चलकर एक आदर्श नारा बन गया।

निष्कर्ष

महामना जी के बारे मे शब्दों में कह पाना असम्भव है उनकी सेवायें अनन्त है। वे सेवाओं से भी अधिक महान थें वे एक ऐसी शक्ति का नाम थे, जिसमें मिटट्ी के उपकरणों से भी फौलाद के अस्त्र ढ़ालने की क्षमता थी। वे श्रीमद्भागवत के साक्षात विग्रह थे। वे देश की दयनीय दशा से रूग्ण शैया पर भी अत्यत चिन्तित रहें। मृत्यु से 10 दिन पूर्व आपने कहा था मैं मोक्ष नहीं चाहता मैं एक और जनम देश और विश्वविद्यालय के लिए लेना चाहता हूँ।

सर बसर मातम है दुनियाँ जिस तिलक की मौत पर
सच तो यह है उस तिलक का रहनुमा है मालवी
गोखले ने जो दिया था हमको पैगामे अजंल
रे नजर उस इब्तिदा का इंतिहा है मालवी
दिल खुदा का घर है उस घर में बसा है मालवी
हम पुजारी है हमारा देवता है मालवी
ईंट का पत्थर से हम देते नहीं हरगिज़ जवाब
वह बुरा है आप जो समझे बुरा है मालवी।।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Journal of education volume, 1-issue, 2 July, 2013 page no-6.
2. रंजन राजीव लोकसभा चुनाव एवं राजनीति ज्ञान गंगा प्रकाशन प्रथम संस्करण वर्ष–2000.
3. शरण परमात्मा, प्राचीन भारत के राजनीतिक विचारक एवं संस्थाएँ मीनाक्षी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–293.
4. https://www.google.com/search?q=malviya+ji+ki+aatmkatha&oq=malviya+ji+ki+aatmkatha&gs_lcrp=EgZjaHJvbWUyBggAEEUYOTIHCAEQIRigATIHCAIQIRiPAjIHCAMQIRiPAtIBCjE3Nzc5ajBqMTWoAgiwAgHxBaGh7LExBFji&sourceid=chrome&ie=UTF-8
5. Dharmpran, Mahamana pandit madan mohan malviya ji lekhak pandit shree ram Sharma acharaya.
6. Mahamana pandit madan mohan malviya ji –byaktitwa avam vichar. Lekhak balmukund pandey ji. Page no. 14-20.

❑❑❑